ग़ज़ल की नक़ल

विपिन मित्तल

GAHAAN BOOKS

ग़ज़ल की नक़ल

विपिन मित्तल

GAIHAAN BOOKS

GAIHAAN BOOKS

गैहान बुक्स प्राइवेट लिमिटेड

62, खिज़राबाद कॉलोनी, खजराना इंदौर 452016

write@gaihaanbooks.com
www.gaihaanbooks.com

ग़ज़ल की नक़ल

© विपिन मित्तल

ISBN -

पहला एडिशन - 2026

❖ बुक डिज़ाइन ❖

इक़बाल हुसैन

❖ कवर डिज़ाइन ❖

सय्यद निज़ाम अली

कीमत -

इस किताब के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक की लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

मेरी बात

प्रिय पाठक,

मैं इसे ग़ज़ल कह रहा हूं, लेकिन इसको पढने के लिए उर्दू या साहित्यिक हिंदी आना जरूरी नहीं है। चाहे आप 20 साल के युवा हों या 85 साल के अनुभवी बुज़ुर्ग, चाहे आप व्यापारी हों या अधिकारी, अभिनेता हों या इंजीनियर या कोड लेखक, गृहिणी हों या खेल कप्तान, छात्र हों या प्रोफेसर, चाहे आप हिंदी/उर्दू कविता के शौकीन हों या आपने कभी कोई ग़ज़ल या कविता नहीं पढ़ी हो, हिंदी का जरा सा भी ज्ञान रखने वाले प्रत्येक पाठक को इस पुस्तक में अपने दिल की धड़कन महसूस होगी।

मैंने 30 जाने माने शायरों की पहली दो या चार लाइनें लेकर, उनके विस्तार रूप में कुछ और नये छंद रचे हैं। पहले आप उन लोकप्रिय कवियों की पंक्तियों का आनंद लें, फिर मेरे नये छंदों में उन सब रसों का मजा लें। मेरे कुछ शेर आपके दिल को गुलाब की तरह स्पर्श करेंगे; कुछ आपके दिमाग को छेड़ेंगे। कुछ आत्म-ज्ञान की झलक देंगे, और अधिकांश छंद आपके चेहरे पर मुस्कान लाएंगे।

एक उदाहरण देखिए (खुर्शीद हैदर की ग़ज़ल 'ज़रा देर लगेगी' पर आधारित):

इधर राधा मुझको प्यार करे,
उधर मीरा मेरा ध्यान करे,
अब इन दोनों का चक्कर,
सुलझाने में ज़रा देर लगेगी।

मेरे जीवन में कभी ख़ुशी, कभी गम है। कुछ पल थोड़े खट्टे, कुछ थोड़े मीठे। आप का जीवन भी कुछ ऐसा ही दो रसों की 'कॉकटेल' है। मेरी ग़ज़लों और कविताओं में भी आप को इमली और किशमिश, दोनों रसों का स्वाद आएगा। प्यारे पाठक, आओ; 30 अद्भुत मूल ग़ज़लों और उन पर आधारित मेरे रसदार नए छंदों को पढ़ने का आनंद लो!

-विपिन

कई रसों का कॉकटेल

30 लोकप्रिय कवियों और शायरों की ग़ज़लों में कई तरह के रस हैं; मोहब्बतें, हास्य, गम, ख़ुशी, कल्पना, संवेदना, इंसानियत, दर्शन। मेरी ''नक़ल कविताओं'' में भी सब रस हैं और प्रेम, भक्ति, शैतानी, आवारगी और सबसे आनंददायक, पूर्ण रूप से खिलता हुआ, महकता हुआ रोमांस– इन सब रसों को मैंने मिलाया है। मुझे इन्हें लिखने में असीमित आनंद आया और रसों का ये कॉकटेल यहां आपके आनंद के लिए मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ।

– विपिन

अन्दर के पन्नों में

1. कुमार विश्वास 09
2. हिमांशी बाबरा 13
3. मंज़र भोपाली 17
4. अज़हर इक़बाल 21
5. अलीना इतरत 24
6. ज़ुबैर अली ताबिश 27
7. मनोज मुंतशिर 29
8. सय्यद सरोश आसिफ़ 32
9. शकील आज़मी 35
10. इक़बाल अशहर 38
11. काशिफ़ सय्यद 41
12. अम्मार इक़बाल 44
13. शारिक़ क़ैफ़ी 47
14. तहज़ीब हाफ़ी 50
15. फ़हमी बदायूनी 52
16. महशर आफ़रीदी 55
17. उमैर नजमी 58
18. विज्ञान व्रत 61
19. हसन अब्बास रज़ा 64
20. मदन मोहन मिश्रा 'दानिश' 67

21.	फ़रहत एहसास	70
22.	कलीम आजिज़	73
23.	खुर्शीद हैदर	76
24.	नईम अख़्तर ख़ादिमी	79
25.	अंबरीन हसीब अंबर	82
26.	नदीम शाद	85
27.	चंदन राय	87
28.	अज़्म शाकरी	89
29.	हरिवंशराय बच्चन	92
30.	कुमार विश्वास	97
31.	मेरी एक कविता- आंगन	100
	अब दस शे'र बोनस में	102
31.	एक 'गाइडेड टूर'	105
32.	मेरा ये गुलदस्ता	125
33.	मेरी अंतिम बात	126

01

ग़ज़ल

कुमार विश्वास

कब तक गीत सुनाऊँ राधा,
कब तक गीत सुनाऊँ
मथुरा छूटे, छूटे द्वारका,
इंद्रप्रस्थ ठुकराऊँ

कैसे राम बनूं मैं राधा?

नक़ल

अब कौन सा गीत सुनाऊँ राधा,
अब कौन सा गीत सुनाऊँ?

मटकी अब मैं नहीं तोड़ता,
माखन अब मैं नहीं चुराता,
चुनरी, साड़ी, लहंगा, चोली–
कपड़े अब मैं नहीं छुपाता।
अब और क्या शर्त निभाऊँ राधा,
अब और क्या शर्त निभाऊँ?
अब कौन सा गीत सुनाऊँ राधा,
अब कौन सा गीत सुनाऊँ?

इसके बाद 38 और पंक्तियाँ

02

ग़ज़ल

हिमांशी बाबरा

आप-बीती कोई समझे तो बताऊँ मैं भी,
मुझको सुनना कोई चाहे तो सुनाऊँ मैं भी।
मेरी आँखें ही सहारा नहीं देती वरना,
चाहता हूँ तेरी तस्वीर बनाऊँ मैं भी।

हर गोपी को गुलाल लगाऊँ मैं भी

'मी टू' से अब बहुत डर लगने लगा है वरना,
गोकुल की हर गोपी को गुलाल लगाऊँ मैं भी

नक़ल

इसके बाद 11 और शे'र

|

03

ग़ज़ल

मंज़र भोपाली

वो कहीं तो मिले, वो कभी तो मिले,

ख़्वाब में ही सही ज़िंदगी तो मिले

हमें तेरी चुनरी तो मिले

छुपा लेंगे चेहरा अपना तेरी नज़रों से परे.
छुपाने को मेरी जान, हमें तेरी चुनरी तो मिले।

नक़ल
(Part-1)

इसके बाद 6 और शे'र

Part 2: हास्यरस

कब तक मुझसे रूठा रहेगा ए मेरे खुदा,
कोई बीमारी दे, सो एक नर्स तो मिले।

इसके बाद हास्यरस के 4 और शे'र

04

ग़ज़ल

अज़हर इक़बाल

ये ख़ौफ़ है कि रगों में लहू न जम जाए,
तुम्हें गले से लगाया नहीं बहुत दिनों से

ख़त उसका आया नहीं है

आजकल की सुंदरियों का
क्या गुणगान करूं मैं,
सूट "मी टू" का हथेली पर,
बदन पूरा ढकने वाला अभी तक सिलवाया नहीं है।

इसके बाद 8 और शे'र

05

ग़ज़ल

अलीना इतरत

ज़िंदा रहने की ये तरकीब निकाली मैंने,
अपने होने की ख़बर, सब से छुपा ली है मैंने।

मेरा दिल एक मंदिर है

नक़ल

उसको खो कर फिर से पाने की,
एक तरकीब निकाली है मैंने,
दिल के दो टुकड़े कर,
साथ धागा सुई भीजवाई है मैंने।

इसके बाद 7 और शे'र

06

ग़ज़ल

ज़ुबैर अली ताबिश

दिल फिर उस कूचे में जाने वाला है
बैठे-बैठे ठोकर खाने वाला है

मंदिर उसको मैंने माना है

आज यह कोई हरकत करने वाला है,
यह इसकी फ़ितरत है, फ़ितरत करने वाला है;
जहाँ रोज़ कत्ल होता है ख़्वाबों का,
उसी गली में आज ये दिल जाने वाला है।

नक़ल

इसके बाद 5 और शे'र

आखिरी पंक्ति आपको चौंका देगी

07

ग़ज़ल

मनोज मुंतशिर

तू नहीं है तो कौन सुलझाये
जो परेशानी रु-ब-रु है आज
कौन से रंग के कपड़े पहनूं
अच्छा दिखने की आरज़ू है आज

तकिया रात भर जागा है आज

पलंग पर चादर नई बदली है
तुम्हारी खुशबू बहुत याद आयी आज;
मैं तो किसी तरह सो लिया
तकिया रात भर जागा है आज।

नक़ल

इसके बाद 6 और शे'र

08

ग़ज़ल

सय्यद सरोश आसिफ़

उसके हाथ में गुब्बारे थे
फिर भी बच्चा गुम-सुम था
वो गुब्बारे बेच रहा हो
ऐसा भी हो सकता है।

नयी मुलाक़ात का ताज़ा नशा

मदिरा मैंने बिल्कुल नहीं पी है,
फिर पाँव मेरे लड़खड़ाये क्यों?
नयी मुलाक़ात का ताज़ा नशा हो,
ऐसा भी हो सकता है।

नक़ल

इसके बाद 5 और शे'र

09

ग़ज़ल

शकील आज़मी

जिस जगह हमने कैलेंडर
में जुदाई लिखी,
एक मुलाकात की तारीख
अभी वहां बाकी है

अब एक कहानी में लिखूंगा

नक़ल

मेरी महबूबा का एक और दीवाना है,
पर वो शादी से घबराता है,
आशा की एक किरण इसीलिये,
मेरे दिल में अभी बाकी है।

इसके बाद 5 और शे'र

10

ग़ज़ल

इक़बाल अशहर

ठहरी ठहरी सी तबीयत में रवानी आई
आज फिर याद मोहब्बत की कहानी आई
आज फिर नींद को आँखों से बिछड़ते देखा
आज फिर याद कोई चोट पुरानी आई

मुद्दतों बाद चला उन पे हमारा जादू
मुद्दतों बाद हमें बात बनानी आई।

मुद्दतों बाद एक हसीना

सांस रुक सी गई, ऐसा लगा
कि मौत अब आई अब आई,
नर्स निकली पहली महबूबा,
मुर्दे में जान वापस आई।
मुद्दतों बाद दिल की धड़कन
का नया आभास हुआ,
मुद्दतों बाद जवानी हम तक
चलकर वापस आई

नक़ल

इसके बाद 5 और शे'र

11

ग़ज़ल

काशिफ़ सय्यद

इस पार मैं हूँ झील के उस पार आप हैं
लहरों के आइनों में लगातार आप हैं

मिस इंडिया को भी देख लिया

इस पार तन्हाई है,
रुसवाई है, हरजाई है,
इन सबकी छू मंतर जादूगरनी,
उस पार आप हैं।

नक़ल

इसके बाद 5 और शे'र

12

ग़ज़ल

अम्मार इक़बाल

थक गए तो थकन छोड़ के जा सकते हो
तुम मुझे वाक़यतन छोड़ के जा सकते हो

तुम्हारी आंखों में जादू क्यों है?

कोई सुंदरी अगर करे दावा
तुमसे ज्यादा सुंदर होने का,
तुम मुझसे विश्व सुंदरी का
ताज लेने आ सकती हो।
कोई गर करे बेवफ़ाई तुमसे,
तुम मेरा खंजर लेने आ सकती हो।

तन का रिश्ता ही तो रिश्ता नहीं होता,
तुम मन से मन मिलवाने आ सकती हो।

नक़ल

इसके बाद 32 और पंक्तियाँ

13

ग़ज़ल

शारिक़ कैफ़ी

इक दिन ख़ुद को अपने पास बिठाया हम ने
पहले यार बनाया फिर समझाया हम ने
घर से निकले चौक गए फिर पार्क में बैठे
तन्हाई को जगह जगह बिखराया हम ने।

मंदिर में सब सजकर आईं थीं

नक़ल

मंदिर में सब सजकर आई थी,
उनसे मिलने का एक 'प्लान' बनाया हमने;
पंडित बन खुद चौकी पर बैठे,
असली वाले को 'किडनैप' कराया हमने।

इसके बाद 16 और पंक्तियाँ

14

ग़ज़ल

तहज़ीब हाफ़ी

तुम क्या जानो उस दरिया पर क्या गुज़री,
तुमने तो बस गागर भरना छोड़ दिया।

कितना भी रस डाले हलवाई

नक़ल

कितना भी रस डाले हलवाई, जलेबी अब मीठी नहीं बनती,
'डायट' के चक्कर में तुमने, जब से मीठा खाना छोड़ दिया।

इसके बाद 12 और पंक्तियाँ

15

ग़ज़ल

फ़हमी बदायूनी

हम तिरे ग़म के पास बैठे थे
दूसरे ग़म उदास बैठे थे
बस वही इम्तिहां में पास हुए
जो तिरे आस-पास बैठे थे

तुम्हें नींद नहीं आएगी हमें पता था

सुना है तुम जिद्दी आशिक़ों की
गरदन काट देती हो,
इसलिए हम गर्दन झुकाये,
एकदम तैयार बैठे थे।

नक़ल

इसके बाद 26 और पंक्तियाँ

16

ग़ज़ल

महशर आफ़रीदी

जगह नहीं थी मगर मैं बना के बैठा हूँ।
मैं इस जगह से किसी को उठा के बैठा हूँ।

महफ़िल में कई सुंदर चेहरे हैं

अब यहां कोई नहीं बैठने वाला है,
हम यहां गार्लिक खा कर बैठे हैं;
हमारा रोम रोम महक रहा है,
इसलिए सब हमसे दूर जाके बैठे हैं।

नक़ल

इसके बाद 30 और पंक्तियाँ

17

ग़ज़ल

उमैर नजमी

बिछड़ गये तो ये दिल उम्र भर लगेगा नहीं
लगेगा, लगने लगा है, मगर लगेगा नहीं

वो मेरे गीत गुनगनाने लगा है

नक़ल

चाँद की आरज़ू है झील में
अपना चेहरा देखने की
पानी भरी थाली से उसका काम,
चलने लगा है, चल रहा है, मगर चलेगा नही।

इसके बाद 8 और शे'र

नक़ल

इन पृष्ठों पर आपको इन कवियों की कविताओं की पहली चार पंक्तियाँ पढ़ने को मिलेंगी, और फिर मेरी पूरी कविता जो इन महान कवियों से प्रेरित हुई हैं।

18. विज्ञान व्रत
19. हसन अब्बास रज़ा
20. मदन मोहन मिश्र
21. फ़हरत एहसास
22. कलीम अजीज़
23. खुर्शीद हैदर
24. नइम अदीम अख्तर
25. अम्बरीन हसीब अम्बर
26. नदीम शाद
27. चंदन राय

28

ग़ज़ल

अज़्म शाकरी

लाखों सदमे ढेरों ग़म,
फिर भी नहीं है आंखें नम
एक मुद्दत से रोए नहीं, क्या
पत्थर के हो गए हम

कल पंडित जी जीमने आये

हर इंसान असमंजस में है,
नमक करुं कम या चीनी कम;
मेरी बातें अब मीठी नहीं होती,
जब से हो गई मिठाई ख़त्म।

नक़ल

कल पंडित जी जीमने आये,
साथ में मोटा पेट भी लाये,
दो घंटा वो भोग लगाये
रबड़ी ज्यादा दाल कम।

इसके बाद 8 और शे'र

29

ग़ज़ल से अलग

हरिवंशराय बच्चन

मैं ही मधुशाला का मालिक,
मैं ही मालिक-मधुशाला हूं।
मधुपात्र, सुरा, साकी लाया,
प्याली बांकी बांकी लाया,
मदिरालय की झाँकी लाया,
मधुपान कराने वाला हूं
मैं ही मालिक-मधुशाला हूं।

मैं अपने मन का मालिक हूँ

मैं अपने मन का मालिक हूँ
दीवाना हूँ, मतवाला हूँ।

आओ मेरे मदिरालय में आओ,
नाचो, गाओ, धूम मचाओ,
भंडार मदिरा का खुलवाकर
मैं मुफ्त पिलाने वाला हूँ।

नक़ल

मैं अपने मन का मालिक हूँ,
दीवाना हूँ, मतवाला हूँ।

कृष्ण से मांगी मुरली मैंने, अब
गीत सुनाने वाला हूं;
हर गोपी को रीझा रीझा कर रास
रचाने वाला हूं।

मैं अपने मन का मालिक हूँ
दीवाना हूँ, मतवाला हूँ

इसके बाद 15 और छंद

30
ग़ज़ल

कुमार विश्वास

तुम्हारी और मेरी रात में,
बस फर्क इतना है,
तुम्हारी सो के गुजरी है,
हमारी रो के गुजरी है।

तुम्हारी और मेरी थाली में,
अंतर बस इतना है

नक़ल

तुम जिस शहर में जाती हो,
लोग दीवाने बन जाते हैं,
मैं जब शहर छोड़ता हूं,
वो जश्न मनाने लगते हैं।

तुम्हारी और मेरी थाली में,
अंतर है बस इतना,
तुम्हारी रोटी बनी बनाई है,
हमने बना के खाई है।

इसके बाद 6 और शे'र

किसी पर भी आधारित नहीं – मेरी एक कविता

आंगन

उस आंगन में क्या देखा,
पौधा देखा, झरना देखा,
राम का छोटा मंदिर देखा,
रंगोली का मेला देखा।

खाट पे बैठा बापू देखा,
उसको गीता पढ़ते देखा;
अम्मा को गीता सुनते देखा,
मुन्ने का स्वेटर बुनते देखा।
मुन्ने को साइकिल पर देखा,
गिर कर हंस कर उठता देखा,
पिंजरे में एक तोता देखा,
गीता को दोहराता देखा।

उस आंगन में क्या देखा,
पौधा देखा, झरना देखा।

इसके बाद 20 और पंक्तियाँ

अब 10 (दस) शे'र बोनस में

तुम मेरी फेवेरिट मिठाई हो

**मेरी कुछ फ्री व्हीलिंग आज़ाद ग़ज़लें
जो अकेले ही मस्ती में घूम रही हैं**

1.

उम्र भर बहुत मिठाई खाई है मैंने,
मिठाई खाने से कोई जी भर नहीं जाता,
तुम मेरी 'फेवेरिट' मिठाई हो,
वर्ना हलवाई क्या क्या नहीं बनाता।

इसके बाद मेरे 8 और शे'र

10,

**थोडा समय काम में लगाओ,
थोडा बिताओ देवालय में,
फिर मेरे पास आकर बैठो,
आनंद उठाओ मदिरालय में।**

एक 'गाइडेड टूर'

मेरे साथ चलिये, मैं आपको इस पुस्तक की ग़ज़लों और कविताओं का एक छोटा सा विवरण देना चाहता हूँ: मेरे लिए उनका क्या अर्थ था और मेरी 'एक्सटेंशन' कविताएँ किस प्रकार मूल कवि के विषय से चिपक कर उसको प्रस्तुत करती हैं, या किस प्रकार वे उस विषय के एक भिन्न पहलू की खोज में थोड़ा भटक जाती हैं। इसको आप एक 'गाइडेड टूर' समझ लीजिए। अगर आप यहां शुरुआत में ही आए हैं, तो अब मेरे इस 'गाइड' के साथ-साथ उन ग़ज़लों को पढ़िए; अगर आप पहले ही सब ग़ज़लें पढ़ चुके हैं तो अब उन्हें फिर से मेरा रंगीन चश्मा लगा कर पढ़ कर देखिये।

1. कुमार विश्वास

कुमार विश्वास आधुनिक युग के भारत के सब से ज्यादा लोकप्रिय कवि हैं। लाखों उनके 'फैन्स' (fans) हैं और उन्हीं में से एक मैं भी, उनके गीतों को बड़े आनंद से सुनता रहा हूँ।

....

अपने नए गीत *'अब कब तक गीत सुनाऊँ राधा'* में उन्होंने दोनों पहलुओं को, दोनों रसों को मिलाया है।

....

मेरे इस गीत रूपान्तर में कृष्ण के तीन रूपों की झांकी आप को मिलेगीः बालक रूप में नटखट हरकतें, युवावस्था के 'फ्लर्टिंग' के 'एपिसोड', और मामा कंस के यमदुतों को धराशाय करने के लिए देवतुल्य शक्ति का प्रयोग।

इस कहानी को सुना रहे हैं स्वयं कृष्ण, अपनी रूठी हुई राधा को मनाते हुए, पूर्ण विनम्रता, या यहाँ तक कि लाचारी भरी प्रेम लीला में पिरो कर। हम सब के प्यारे कृष्ण के जीवन की यह मनमोहक कल्पित कहानी है, पढ़िए और इसका आनंद लीजिए।

यह मात्र एक अंश है

2. हिमांशी बाबरा

हिमांशी बाबरा एक युवा शायरा हैं जिनकी ग़ज़लों में किशोरावस्था और 'कमिंग ऑफ़ ऐज' प्रेमियों की परेशानियाँ भी हैं और मस्तियाँ भी। यहाँ पेश की गई ग़ज़ल में वे हमारे 'रोमांटिक' दिल की हालत बता रही हैं जिसमें आरज़ू भी है और बेबसी भी। .....

...

यह मात्र एक अंश है

3. मंज़र भोपाली

मंज़र भोपाली साहिब के गीत और अद्भुत गायन आवाज़ ने मेरा ध्यान खींचा। मैंने उनकी ग़ज़लें कई बार सुनी हैं। उनकी यह ग़ज़ल एक आशिक को अपने सपनों की ज़िंदगी को सिर्फ़ सपनों में जी पाने से संतुष्ट दिखाती है।

इस ग़ज़ल को आगे बढ़ाने वाले मेरे सात शे'र (जो एक महीने से ज़्यादा समय में मेरे दिमाग में उपज पाए), उन सभी का विषय एक ही है- हम अपनी माशूका न मिलने पर भी जीवन का गुज़ारा कर लेंगे, अगर हमें उसके साथ जुड़े रहने के लिए कोई 'सिंबल,' कुछ सांत्वना पुरस्कार ही मिल जाये। यही सोचकर मैंने लिखा है-

'....... तेरी चुनरी तो मिले'।

यह मात्र एक अंश है

4. अज़हर इक़बाल

अगर आप शुद्ध हिंदी में शायरी का मज़ा लेना चाहते हैं, तो यह एक शायर है जिसे आप ज़रूर पढ़ना चाहेंगे। उनकी जिस ग़ज़ल ने मेरी कल्पना को झकझोर दिया वह थी-

ये ख़ौफ़ है कि रगों में लहू जम न जाए,
बहुत दिनों से उन्हें गले से लगाया नहीं है।

यह मात्र एक अंश है

5. अलीना इतरत

अलीना इतरत साहिबा की कविता हमारी दुनिया के लोगों की सताती हुई निगाहों से बचकर सकून से जिंदगी गुजारने का एक उपाय बता रही है। मेरा एक शे'र उसी पीड़ा से छुटकारा पाने का एक और उपाय बताता है : '

हवा में ज़हर ही ज़हर है, सो अपना चेहरा ढांक लिया मैंने,
मेरा दिल एक मंदिर है, उसको आंधी से बचा लिया मैंने।

यह मात्र एक अंश है

6. ज़ुबैर अली ताबिश

ज़ुबैर अली ताबिश एक विद्रोही दिल वाले युवा कवि हैं। उनकी कई ग़ज़लों में एक रोते हुए दिल की ख़ामोश आवाज़ है ('ये समुन्दर ने राज ही रखा, किसने आंसू मिलाये

पानी में'), तो कई और में किसी मंडराते खतरे को भी चुनौती ('इरादा है बर्बाद करने का मुझको, तो फिर वक़्त बर्बाद क्यूं कर रहे हो') इन्हें आप उनकी किताब ('तुम्हारे बाद का मौसम') में पढ़कर आनंद लें।

जो शे'र मैंने यहां चुना है, उसमें एक आशिक़ के दिल की नटखट ज़िद है।

यह मात्र एक अंश है

7. मनोज मुंतशिर

उन्होंने ग़ज़लें भी लिखी हैं ('मेरी फ़ितरत है मस्ताना')। उनकी एक ग़ज़ल जो मेरा ध्यान पकड़ कर बैठ गई, वो मैंने यहाँ चुनी है।

देखिये मेरा नायक किस तरह अपनी प्रेमिका में पूरी तरह डूब गया है :

यह मात्र एक अंश है

'तकिया रात भर जागा है आज'

8. सय्यद सरोश आसिफ़

इस शे'र में ये कवि उन दो स्थितियों को जोड़ते हैं, जो पहली नज़र में विपरीत लगती हैं और इसलिए हैरान करने वाली होती हैं। फिर वह हमें संभावना दिखाते हैं।

यह कुछ अर्थों में एक 'आई क्यू' का अभ्यास है। मैंने भी उसी तरह से पहेलियाँ बुझाने का माहौल बना कर रखा है। ▪

यह मात्र एक अंश है

'गले में उसके थी बंदूक लेकिन, लोग पंडित पंडित बुला रहे थे उसको'।

पढ़िए और अपने दिमाग को थोड़ा छेड़िए।

9. शकील आज़मी

शकील आज़मी की ग़ज़ले तो अदभुत है ही, उन्हें उनको सुनाने का तरीका भी अद्भुत है। वो सिर्फ गले से नहीं, पूरी बॉडी से गाते हैं। आवाज़ पूरे हाल में गुंजने वाली, और 'बॉडी एनीमेशन' ऐसा शानदार (और जानदार भी), आपकी नज़र स्टेज से हटेगी ही नहीं। पूरे तन मन से गाने की कला हम सब उनसे सीखे।

मैं उनकी एक एक ग़ज़ल को 10 बार सुन चुका हूं, या कहिए 'देख' चुका हूं। उनकी कई ग़ज़लों में मोटिवेशन भी है,जैसे-

'परों को खोल, ज़माना उड़ान देखता है।'

इ

एक मुलाकात की तारीख अभी वहां बाकी है

मेरे छह नए शे'र भी इसी 'ऑप्टिमिस्म' को दर्शाते हैं।

यह मात्र एक अंश है

10. इक़बाल अशहर

इस चरम आनंददायक शायर की यह ग़ज़ल शुरू होती है इन पंक्तियों से।

ठहरी ठहरी सी तबीयत में रवानी आई,

आज फिर याद मोहब्बत की कहानी आई

हम सभी ने अपने जीवन में कभी न कभी ऐसा महसूस किया है: हमारा जीवन ठहर गया है, सुस्त सुस्त, उत्साहहीन (विशेष रूप से मध्य-जीवन के वर्षों में); फिर अचानक हमारी स्मृति हमें हमारे अतीत के सुखद दिनों में वापस ले जाती है; या हमारी कल्पना कोई नया सपना बुनती है, और अचानक हमारा ठहरा हुआ जीवन गति पाने लगता है। कवि ने जीवन के इसी हिस्से को पकड़ा है।

उ

मेरे विस्तार की ग़ज़ल में सबसे मज़ेदार (और सच भी) छंद है–

यह मात्र एक अंश है

11. काशिफ़ सय्यद

काशिफ़ सय्यद साहिब झील के किनारे बैठे हैं और बीच की लहरों में जो देखते हैं उससे मोहित हो जाते हैंः अपनी प्रेमिका का चेहरा।

'सब सुंदरियों से मिल लिया, मिस इंडिया को भी देख लिया,
मेरे गोकुल की प्यारी राधा, उस पार आप हैं।'

यह मात्र एक अंश है

12. अम्मार इक़बाल

अम्मार इक़बाल एक युवा शायर हैं जो हल्की हल्की मुस्कान के साथ ग़ज़ल सुनाते हैं। उनकी इस ग़ज़ल के बारे में क्या कहूं? उनकी प्रियतमा चली जाए या रहे, वो उसे बड़े ही 'कूल' हो कर मुस्कुराते हुए स्वीकार करते हैं। अगर आप उनकी पूरी ग़ज़ल पढ़ेंगे तो आपको हर जगह वही मधुर स्वीकार्यता मिलेगी।

यह मात्र एक अंश है

13. शारिक़ क़ैफ़ी

शारिक़ क़ैफ़ी साहब शायरी आत्म-ह्रास या 'सेल्फ़-डेप्रकेशन' स्टाइल में करते हैं। जैसे उन्होंने कहीं लिखा हैः 'इश्क की बात मत करो तुम हमसे, हम इसी मैदान में हारे हुए हैं' या 'भीड़ ने यूँ ही रहबर मान लिया है वरना, अपने अलावा किस को घर पहुंचाया हमने'। (आत्म-ह्रास एक अद्भुत गुण है; वह अहंकार या 'हूब्रिस' की बीमारी का एक बहुत सरल इलाज है)

यह मात्र एक अंश है

14. तहज़ीब हाफ़ी

तहज़ीब हाफ़ी साहब का यह शे'र 'मानवीकरण' का एक उदाहरण है (जहाँ हम गैर-मानव (जैसे पशु पक्षी) या यहाँ तक कि निर्जीव चीजों को भी वही गुण रखने वाला मानते हैं जो इंसानों में होते हैं)। हाफ़ी की नदी को भी वैसा ही वियोग महसूस होता है जब हमारी नायिका अपनी गागर में उस नदी से पानी भरना बंद कर देती है!

यह मात्र एक अंश है

15. फ़हमी बदायूनी

वरिष्ठ शायर फ़हमी बदायूनी की कविता एक कोमल रंगों में बनी पेंटिंग की तरह है। उसको सुनना या पढ़ना एक धीमी, ठंडी हवा का आनंद लेने जैसा है। ऐसा ही हम तब महसूस करते हैं जब हम खुद को अपनी रोमांटिक रुचि के पात्र व्यक्ति के बगल में बैठे पाते हैं।

मेरे सात शे'र उसी ठंडी हवा में घूम रहे हैं, अपनी प्रेमिका से निकटता की उसी हवा का आनंद लेते हुए आशिक की झाँकी दिखा रहे हैं,

यह मात्र एक अंश है

16. महशर आफ़रीदी

आफ़रीदी साहिब की ग़ज़लों में कई भिन्न-भिन्न 'थीम' पाई जाती हैं। कुछ हसीनों की तारीफ़ में हैं-

यह मात्र एक अंश है

रहता है सिर्फ़ एक ही कमरे में आदमी
उस का गुरूर रहता है बाक़ी मकान में

आज हम यहाँ स्वागत पाकर बैठें हैं
हम यहां अपना स्थान बना के बैठे हैं

यह मात्र एक अंश है

17. उमैर नजमी

मंजे हुए युवा शायर उमैर नजमी के इस शे'र में यथार्थवाद और वास्तविकता की स्वीकृति है, जो स्पष्ट और सरल है। दिल के मामलों में हमारा घाव ठीक होता हुआ प्रतीत होता है, लेकिन यह कभी पूरी तरह से ठीक नहीं होता।

यह मात्र एक अंश है

18. विज्ञान व्रत

यह कविता मुझे दो कारणों से पसंद आई– एक यह विचार कि हम जितना ख़ुद को समझते हैं उससे कहीं ज़्यादा हैं; इसी प्रकार दूसरे लोग भी उससे कहीं ज़्यादा हैं जितना हम उन्हें श्रेय देते हैं। और दूसरा विचार यह कि हमें जिज्ञासु होना चाहिए।

यह मात्र एक अंश है

19. हसन अब्बास रज़ा

हसन रज़ा साहिब की कविता मैंने एक बार सुनी थी। .....इस ग़ज़ल में वे एक पत्नी की कुछ हल्की सी परेशानी देने वाली आदतों का ज़िक्र कर रहे हैं।

मेरी पूरी कविता उसी वैवाहिक जीवन में शिकायत या 'पीव' का विस्तार है।

'अगर मेरी कमीज़ उनकी साड़ी से मैच ना करे तो बहुत बवाल करती है।'

यह मात्र एक अंश है

20. मदन मोहन मिश्र 'दानिश'

ये कवि अपनी सभी कविताओं में जीवन का ज्ञान समेटे हुए है।

यह मात्र एक अंश है

21. फ़रहत एहसास

इस ग़ज़ल में शायर की अपने रोमांस पार्टनर के प्रति सराहना और आराधना बेजोड़ है। उस प्रेमिका के चेहरे पर जो सुंदरता, जो रंग हैं, वो भी बेजोड़ हैं:

'वो रंग है ही नहीं जो तेरे बदन में नहीं'

यह मात्र एक अंश है

22. कलीम आजिज़

उनकी 'दादाजी जैसी' मीठी आवाज़ में यह ग़ज़ल सुनना एक रस भरी यात्रा है। उनकी ग़ज़ल को आगे बढ़ाते हुए, मैंने एक महत्वपूर्ण लेकिन हानिरहित बदलाव किया है।

तो आगे बढ़िए, दो मिनट के लिए जब आप मेरी यह ग़ज़ल पढ़ें, तो खुल कर हँसिये।

यह मात्र एक अंश है

23. ख़ुर्शीद हैदर

ख़ुर्शीद हैदर साहिब अपनी कविताओं में भावनाओं और अपनी जादुई गायन आवाज़ दोनों के लिए जाने जाते हैं।

यह मात्र एक अंश है

'इधर राधा मुझको प्यार करे, उधर मीरा मेरा ध्यान करे'

उन्हें पढ़ कर आनंद लें।

24. नईम अख़्तर ख़ादिमी

नईम अख़्तर ख़ादिमी साहिब ने टिप्पणी की है कि जितने कम शब्द होंगे, ग़ज़ल उतनी ही अच्छी होगी (व्यक्तिगत श्रवण)। मैंने यहां उनकी जो कविता चुनी है, वह इस सिद्धांत को दर्शाती हैः 'न किसी को याद किया न किसी ने पुकारा')।

यह मात्र एक अंश है

इन कविताओं का आनंद लें और अपने जीवन में थोड़ी और आशावादिता को आमंत्रित करें।

25. अंबरीन हसीब अंबर

मुझे उनके अमेरिका दौरे के दौरान एक मुशायरे में व्यक्तिगत रूप से उनकी कविताएँ सुनने का सुनहरा मौका मिला था। 'तुम भी ना' उनकी एक प्रमुख कविता है, और उन्ही के मुहं से उसे सुनकर बहुत आनंद आया था।

जैसे यह सनक-

एक साइज कम पहनने की जिद में,
अपनी सुंदर काया को कितना कष्ट देती हो।
तुम भी ना!

26. नदीम शाद

जब मैंने नदीम शाद साहिब को यह शे'र कहते हुए सुना तो मैं अपने दिमाग को मुस्कुराने से रोक नहीं पाया।

....

इस विचित्र कायापलट को मैंने नेताओं से लेकर हमारे सामने बैठी एक हसीना की मनमोहक हरकत में ढाला है। आशा है कि आप इन शे'रों का आनंद लेंगे।

यह मात्र एक अंश है

27. चंदन राय

'चाहता हूँ हमेशा वो ख़ुश रहे, मैं उसे सिर्फ पाना नहीं चाहता
ज़िंदगी को किसी की अंधेरे में रख, मैं दीवाली मनाना नहीं चाहता।'

चंदन राय एक युवा कवि हैं जो मुशायरों की दुनिया में 'रोमांस के शायर' ('Poet of Romance') के उपनाम से मशहूर है। ....

'मैं भी उसको बुलाना नहीं चाहता'।

मेरे नकल के छंदों में मैंने स्वाभिमान और आदर्शवाद की वही 'थीम' बरकरार रखी है।

यह मात्र एक अंश है

28. अज़्म शाकरी

इस लोकप्रिय शायर का जो शे'र मैंने यहां चुना है उसमें संक्षिप्तता और गहराई दोनों एक साथ हैं: चार पंक्तियाँ, 21 शब्द, सादगी का सार। और वे हमारी कुछ सुसंस्कृत प्रकृति को करीब से पकड़ते हैं : क्या हमने मानवीय भावनाओं के लिए अपनी सारी क्षमता खो दी है?

यह मात्र एक अंश है

....

कुछ मायनों में आपको इस कविता में सबसे मनोरंजक 'मनोरंजन' मिल सकता है। जैसे-

बीबी को अब फुरसत नहीं मिलती,

टीवी ज्यादा, पति सेवा कम।

उधर सरकार ने पाबंदी लगादी है,

टैक्स ज्यादा, बच्चे कम।

इस महान शायर से ऊर्जा प्राप्त करके मैंने अपने हर शे'र में इसी मजेदार रस को भरा है, पढ़कर आनंद लीजिए।

यह मात्र एक अंश है

29. हरिवंशराय बच्चन

महाकवि हरिवंशराय बच्चन की मधुशाला का मैं बहुत समय से दीवाना रहा हूं। अमिताभ जी से उसे सुनकर तो मेरा लगाव, मेरा चाव और भी बढ़ गया। यहां तक कि लगभग पूरी किताब मुझे ज़ुबानी याद हो गई। और अपने अमेरिकी दोस्तों को ट्रांसलेट करके सुनाने लगा। धीरे-धीरे पूरी मधुशाला अंग्रेजी में अनुवाद कर डाली।

फिर उनकी दूसरी किताब मधुबाला पर मेरी नज़र रुकी। उसमें एक कविता मुझे बहुत पसंद आयी– 'मैं मालिक-मधुशाला हूँ'। इसे पढ़ें तो आप भी जानेंगे शुद्ध हिंदी की कविता कितनी सरल और एक दम रसधार हो सकती है। 15 छंद वाली इस कविता में कवि बच्चन पाठक पर मधुशाला और मदिरा (मधु) का आनंद बरसाते हैं।

...

प्याली बांकी बांकी लाया,
मदिरालय की झाँकी लाया,
मधुपान कराने वाला हूं
मैं ही मालिक-मधुशाला हूं।

मैंने इसके मूल छंद ('मैं मालिक-मधुशाला हूँ') को अपनी शैली में ढाला है। कवि की उसी मधुरता को बनाये रखने की कोशिश की है, लेकिन मैं अपने शेरो को 'दुनिया पर खुशियाँ बरसाने की इच्छा' के अमृत में नहलाता हूँ।

'ढेरों लड्डू खिला खिला कर, गणेश को साथ ले आया हूँ'

यह मात्र एक अंश है

30. कुमार विश्वास

'मुशायरा' शैली की कविता का कौन सा प्रेमी कुमार विश्वास की 'तुम्हारी और हमारी रात में अंतर है इतना...' से परिचित नहीं होगा। जैसा कि मुशायरा शैली की कविता के प्रशंसक जानते हैं, किसी हसीना के प्रेम में पागल दीवाने उस महबूबा के अप्राप्य होने की हालत को भी एक मीठे रस की तरह पीते हैं।

कुमार विश्वास के इसी छंद की तरह, मेरे 'एक्सटेंशन' ... छंदों में इसी आशिक की और मजबूरियां देखिये,

यह मात्र एक अंश है

A. आंगन

अब इस तरह 30 कविताओं का विस्तार करने के बाद मैंने सोचा कि मैं बिना किसी सहारे के, शून्य से, कोई कविता बनाने का प्रयास करूँ। आखिरी कविता, आंगन, मेरा मामूली शौकिया प्रयास है। इसमें मैंने अपने भारत की एक तस्वीर शब्दों के रंगों में ढाली है। आशा है इसे पढ़कर आपको अपने देश के सभी परिवारों के आंगन की पारिवारिक मधुरता का आभास होगा।

B. दस आवारा शे'र

और अंत में मैंने अपने कुछ अलग अलग बिखरे आवारा घुमते शे'र पेश किये हैं। हां, ये बिना किसी भूमिका के 'आवारा' फिर रहें हैं। इन्हें पढ़कर आप भी थोड़ी सी आवारगी, थोड़ी सी स्वतंत्रता, थोड़ी सी कल्पना की उड़ान, हल्की-हल्की ठंडी ठंडी बहती हवा के साथ अनुभव करके आनंद लीजिये।

मेरा ये गुलदस्ता

कुल मिलाकर, मेरी 'नक़ल की ग़ज़ले' उनके स्त्रोत लेखक कवियों के प्रति मेरे सम्मान की अभिव्यक्ति हैं। बेशक कई अन्य महान कवि और ग़ज़ल की महान रचनाएँ हैं। मेरा चयन सिर्फ इस बात पर आधारित था कि मेरे 'रेडार' पर कौन सी ग़ज़लें आईं और मुझे कौन सी पसंद आईं, यह पूरी तरह से एक 'रेंडम' चयन था। न ही मैंने इन कवियों को सम्मान देने के लक्ष्य के साथ अपनी परियोजना शुरू की। मैं केवल इतना कह रहा हूँ कि उनकी कविताओं पर विचार करते हुए और उन्हें विस्तारित करते हुए, मेरी भावना हमेशा उनकी कला और शिल्प के लिए प्रशंसा की रही है। उनमें से कई अपने मूल में जीवन ज्ञान रखते हैं; मैंने अपने विस्तार में उस जीवन ज्ञान को बनाए रखने की कोशिश भी की है।

मेरी अंतिम बात

जो 30 कविताएं और ग़ज़लें मैंने चुनी हैं वे बहुत ही मजेदार हैं, आशा है कि आप उन 30 कवियों की पूरी कविताएं पढ़ेंगे; और जब आप उनकी एक ग़ज़ल पढ़ना शुरू करेंगे तो फिर आप उनकी और सभी ग़ज़लें पढ़ने से खुद को रोक नहीं पाएंगे।

इन 30 लोकप्रिय कवियों की मूल कविताओं की तरह, मेरी 'नकल कविताओं' में भी कई रस घुले हुए हैं: मोहब्बत, आशिकी, हिज्र, आरज़ू, आत्म-हास्य, शैतानी, व्यंग्य, सड़क पर आवारगी, बुढ़ापे का मनोरंजन, उत्सवों और मध्यम पेय का आनंद, दोस्तों की हँसी, वास्तविकता की जाँच, अपने प्रिय से अलग होने का दुख और फिर से मिल जाने का सुख, और सबसे आनंददायक, पूर्ण रूप से खिलता हुआ, महकता हुआ रोमांस– इन सब रसों को मैंने मिलाया है।

हमारी ज़िंदगी हमें इमली की चटनी भी देती है और किशमिश का रस भी; मोहब्बत की थाली में तो एक ही प्याले में दोनों को मिलाकर। एक 'चिल' आशिक की यही खासियत है कि वह इस मिश्रित रस को सुकून से पीकर मस्त रहे।

इस पुस्तक की सभी 'नक़ल कविताओं' में हिंदी और उर्दू भाषा की कविताओं और ग़ज़लों का जो अद्भुत आनंद घुला हुआ है, उस आनंद को आप अपने जीवन में घोल लें।

आशा है मेरी ये नकल कविताएं उन 30 मूल कवियों को पढ़ने के लिए आपको उत्सुक करेंगी। उन्हें पढ़कर और मेरी इस किताब को भी समय-समय पर बार-बार पढ़कर अपने जीवन में कविता और ग़ज़ल के मधुरस का आनंद लेते रहें।

डॉ. विपिन बी. मित्तल

डॉ. विपिन बी. मित्तल ने *IIMA* से *MBA*, *BITS* (पिलानी) से इंजीनियरिंग, और पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय से 'कंज़्यूमर साइकोलॉजी' में *Ph.D.* की डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने कंज़्यूमर साइकोलॉजी पर एक कॉलेज पाठ्यपुस्तक (2019) और 'लाइफ हैप्पीनेस' (2020) पर एक लोकप्रिय पुस्तक लिखी है। विश्वप्रसिद्ध काव्य 'मधुशाला' का अंग्रेज़ी अनुवाद भी उन्होंने किया है (2025)। उन्होंने कंज़्यूमर माइंड, लाइफ विज़डम, हैप्पीनेस, और 'एवरीडे जॉय' पर कई प्रस्तुतियाँ दी हैं, सबसे हाल ही में संयुक्त राष्ट्र शांति विश्वविद्यालय में। अमेरिका में रहते हुए वे भारत अक्सर आते रहते हैं, जहाँ वे भारत के पॉपुलर कल्चर को हर बार पूरी तरह से अनुभव करके उसका आनंद लेते हैं।

'ग़ज़ल की नकल' पुस्तक अपने आप में एक अनोखा नवीन प्रयोग है जो Gen Z और सभी पाठकों को बहुत पसंद आयेगा।

अंजुला सिंह भदौरिया

(संस्थापक अध्यक्षा, ईवा ज़िंदगी *Ewa Zindagi*)

इस पुस्तक में विपिन जी ने प्रेम, स्मृति, विडंबना, और जीवन के कई सारे रंगीले पहलुओं को यहाँ गहरी सादगी के साथ गीत और ग़ज़ल में पिरोया है।

-कवि अनन्य देवरिया

₹220 | $12.5

ISBN 978-81-991200-0-6

Memoir

9 788199 120006

GAIHAAN BOOKS

WWW.GAIHAANBOOKS.COM